OM 20 A FINAL-MAHARASHTRA_Page 1 and 2 14/01/2015 08:02 Page 7

महापरिवर्तन की नींव पड़ चुकी है!!!

एक मान्यता है कि जहाँ विरोध है वहीं परिवर्तन है। परन्तु क्या वो परिवर्तन सर्वमान्य व स्थायी है? शायद नहीं ! क्योंकि जब हमें शान्ति स्थापन करनी है तो हम विरोध क्यों करें? बस यही कार्य निर्विरोध रूप से परमात्मा हमसे करवा रहे हैं और उसकी नींव उन्होंने भारत के माउण्ट आबू में रख दी है। आज मानवीय स्थिति को बदलने के लिए या यूं कहें कि महापरिवर्तन के लिए वो शान्ति के सागर परमात्मा शिव इस धरा पर अवतरित हो चुके हैं!

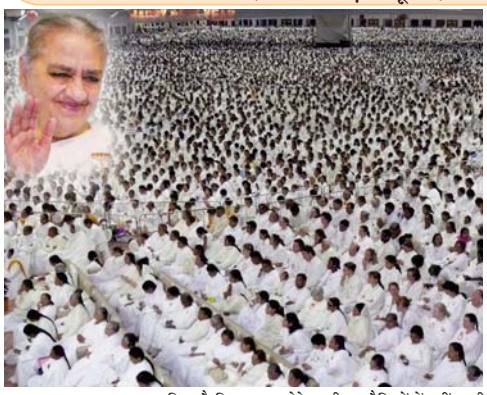

एक मान्यता प्रचलित है कि जब किसी चीज़ का विरोध होता है तभी परिवर्तन होता है। परन्तु आज के समय में वो परिवर्तन सर्वमान्य व स्थायी नहीं माना जाता, क्योंकि उसे सहज भाव से लोगों ने स्वीकारा नहीं होता है। मदर टेरेसा भी उन रैलियों में नहीं जाती थीं जहां विरोध होता था। उनका कहना था कि यदि आप शांति स्थापन करना चाहते हैं तो उसे शांति से करें ना कि विरोध से। इसी श्रृंखला में भारत भूमि पर बड़े सहज व शान्तिमय तरीके से महापरिवर्तन आरंभ हो चुका है। स्वयं परमात्मा ने इसका बीड़ा उठाया है। सुनकर आपको आश्चर्य ज़रूर लग रहा होगा लेकिन ये बात सम्पूर्ण रूप से सत्य है। अरावली की श्रृंखला में बसा एक पवित्र स्थान माउंट आबू महापरिवर्तन के लिए एक अनुपम उदाहरण बन चुका है। यहां पर स्वयं संकट हर्ता, सुख दाता सर्व आत्माओं के पिता परमपिता शिव परमात्मा निराकार ज्योतिर्बिन्दु अपने साकार माध्यम पिताश्री प्रजापिता ब्रह्मा के तन में अवतरित हो, ब्रह्मा वत्सों ब्रह्माकुमार व ब्रह्माकुमारियों के द्वारा महापरिवर्तन का कार्य युद्ध स्तर पर कर रहे हैं। यह परिवर्तन स्वैच्छिक है अर्थात् यहां कोई दबाव ज़बरदस्ती नहीं है। परमात्मा सबसे पहले सभी आत्माओं को उसके स्वयं का परिचय देते कि तुम एक सुंदर शक्तिशाली अविनाशी आत्मा हो। परन्तु बहुत काल से इस अज्ञानता के कारण अपने आप को शरीर समझते हो जिसके कारण दु:ख व अशांति का माहौल बना हुआ है। बस यही एक परिवर्तन है जो हमें उस स्वर्णिम संसार की तरफ ले जाएगा। जब सभी अपने आप को इस महापरिवर्तन में कि ''मैं एक अविनाशी शांत आत्मा हूं और मेरे अंदर मेरे अविनाशी सातों गुण मौजूद है, मैं सतोगुणी हूँ''बस यही हमें स्वर्णिम संसार की तरफ रुख करने में मदद करेगा।

यह कार्य 79 वर्षों से निरंतर जारी है। यहां पर देश- विदेश के बहुत सारे कर्णधारों ने परिवर्तन कर स्वर्णिम दुनिया में आने हेतु अपना पंजीकरण करा लिया है। महापरिवर्तन की इस पावन वेला में परमात्मा शिव आप सबका भी आह्वान कर रहे हैं। आओ मेरे लाडले बच्चों मैं आपके लिए ही तो इस धरा, कलियुगी संसार को सतयुगी संसार बनाने के लिए ही तो अवतरित हुआ हूँ। पूरे विश्व के 137 देशों में लगभग 9 हज़ार से भी अधिक सेवाकेंद्र, उसमें पच्चीस हज़ार से भी अधिक समर्पित भाई एवं बहनें अपनी सेवाएं जनहित के कार्य के लिए दे रहे हैं। एक चरणबद्ध तरीके से परिवर्तन हेतु निरंतर राजयोग का अभ्यास और उससे सम्बन्धित बातें सीखने से हम अपने जीवन में आमूलचूल परिवर्तन कर सकते हैं। तो आओ इस दिशा में अपना पहला कदम तो बढ़ाओ!...

परमात्मा 'शिव' गीता ज्ञान दाता

सभी आत्माओं, महात्माओं, देवात्माओं आदि का परमपिता एक है। उसे ही 'भगवान' अथवा 'परमात्मा' कहा जाता है। ज्ञान, शान्ति, आनंद, प्रेम और पवित्रता का सागर भी वह एक ही है। यह महिमा अन्य किसी भी सामान्य आत्मा, महात्मा, देवात्मा आदि की नहीं हो सकती। इस दिव्य कर्त्तव्य के लिए वह दिव्य जन्म लेता है, वह माता के गर्भ से जन्म नहीं लेता, वह शैशव आदि अवस्थाएं या राज्य-भाग्य तथा सुख-सम्पत्ति नहीं भोगता क्योंकि वह अभोक्ता और कर्मातीत है। वह सारी सृष्टि का माता-पिता, अविनाशी शिक्षक तथा एकमात्र सद्गुरु अर्थात् सद्गति दाता है। निराकार शिव वास्तविक रूप में परमात्मा का नाम है। परमात्मा अपने साकार माध्यम प्रजापिता ब्रह्मा के द्वारा जो ज्ञान देता है वो अति सहज है जिसे कोई भी अपना सकता है। गीता शब्द गीत से बना है, चूंकि गीत बहुत ही मधुर और मनमोहक होता है जिसे सभी लोग सुनते हैं और आनंद विभोर हो जाते हैं। वैसे ही यह ज्ञान भी एक गीत की तरह है जिसे बहुत ध्यान से सुनकर उस पर अमल कर उसका

आनंद ले मनमोहक 'कृष्ण' पैदा होता है। परमात्मा शिव सच्चा गीता ज्ञान दाता है, जिस गीता को सुनकर ही मनमोहन की तरह बना जा सकता है। श्रीमद्भगवद् गीता के लिए संसार में लोग कहते हैं कि इसे सुनकर मोक्ष व स्वर्ग की प्राप्ति होती है और जीवन के अंतिम क्षणों में गीता ज़रूर सुननी चाहिए, ये एक मान्यता है। ये विचारणीय है कि बहुतों ने इस जीवन के दौरान और अंतिम क्षणों में गीता सुनी व पढ़ी है लेकिन क्या उन्हें मोक्ष या स्वर्ग मिला होगा? आज उसी मोक्ष व स्वर्ग को दिलाने के लिए परमात्मा स्वयं इस धरा पर अवतरित हो सहज गीता ज्ञान से स्वर्णिम संसार लाने का अद्भुत कार्य कर रहे हैं। वैसे भी गीता में वर्णित है कि मुझ परमात्मा को समझने व जानने के लिए दिव्य चक्षु अर्थात् दिव्य ज्ञान चाहिए। उसके बिना मैं जाना नहीं जा सकता। भगवान शिव के इस ज्ञान को ही गीता कहा जाना चाहिए, ऐसा हमारा मानना है। जिसे सभी समझकर उस राह पर चल अपने जीवन में अपनाकर देवत्व ला सकते हैं। गीता-ज्ञान उस ज्ञान का सागर, पतित पावन, सर्व आत्माओं के परमपिता, मानव को देवता बनाने वाले, एक मात्र भगवान 'शिव' ने दिया था, जो कि श्रीकृष्ण के भी परमपिता हैं। श्रीकृष्ण ने तो उन परम सद्गुरु शिव से ही वह श्री नारायण पद प्राप्त किया था। इसलिए वृन्दावन में गोपेश्वर का मंदिर है जिसमें दिखाया गया है कि भगवान शिव श्रीकृष्ण के भी पूज्य हैं और गोप-गोपियों के भी मान्य ईश्वर हैं।

दुनिया के नियंता ने बनाया प्रथम अभियंता

दादा लेखराज को हुआ था नई दुनिया की स्थापना एवं कलियुग के विनाश का साक्षात्कार

दादा लेखराज एक दिन वाराणसी में अपने मित्र के यहां गए थे कि उन्हें रात्रि के समय अचानक इस दुनिया के भयंकर महाविनाश का साक्षात्कार होने लगा। ऐसे विनाशक हथियारों का साक्षात्कार हुआ जो उस समय इसकी परिकल्पना तक नहीं थी। फिर इसके बाद नई दुनिया की स्थापना के लिए आसमान से उतरते देवी देवताओं का भी साक्षात्कार हुआ।

दादा लेखराज को यह बात समझ नहीं आई। फिर जब वे अपने घर पहुंचे और एक दिन अपने कमरे में बैठे थे तब उनके अन्दर निराकार परमात्मा ने प्रवेश कर साक्षात्कार कराया तथा स्वयं परमात्मा ने परिचय दिया कि:-

निजानन्द स्वरूपम् शिवोहम्, शिवोहम्
आनन्द स्वरूपम् शिवोहम्, शिवोहम्
प्रकाश स्वरूपम् शिवोहम् शिवोहम्

इस परिचय के साथ स्वयं परमपिता परमात्मा ने यह आदेश दिया कि अब तुम्हें एक नई दुनिया बनानी है। यहीं से शुरू हुआ परमपिता परमात्मा के सृष्टि परिवर्तन का गुप्त कार्य जो आज तक अनवरत चल रहा है।

व्यर्थ से मुक्ति मिली

सभी को जीवन जीने की कला परमात्मा स्वयं इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय के माध्यम से देते हैं। इसीलिए इसे गॉडली यूनिवर्सिटी कहा जाता है। जब मैं परमात्मा से मिला तो मेरे सारे व्यर्थ संकल्प समाप्त हो गए और पॉज़ीटिव संकल्पों की रचना होने लगी, मेरे शरीर में ऊर्जा का सतत् प्रवाह होने लगा और ऐसा अनुभव हुआ कि इसके अलावा दुनिया में सब कुछ सारहीन है। इस ज्ञान के द्वारा जो हमें एकाग्रता की शक्ति मिली है उसके द्वारा हमें दो पार्टियों के बीच मतभेद को सॉल्व करने में बहुत मदद मिलती है। इस दुनिया का परिवर्तन इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय के माध्यम से ही संभव है। **-वी.डी. राठी,** हाई कोर्ट जज, ग्वालियर

हाँ, परमात्मा से मिल चुका हूँ

यह एक ऐसा विश्वविद्यालय है जहाँ जाति, धर्म, देश का कोई भेदभाव नहीं है। यहाँ ही वह शिक्षा मिलती है जिससे हम स्वयं को और परमात्मा पिता को पहचान सकते हैं। यह और संस्थाओं से भिन्न है क्योंकि यहाँ सभी को उच्च संस्कार जागृत करने की शिक्षा मिलती है। मैं इस संस्था में आकर स्वयं निराकार परमात्मा से मिला, उनसे बात की। उस अनुभव को बयान करना भी मुश्किल है। किसी भी धर्मपिता, महान नेता ने विश्व की इतनी सेवा नहीं की है जितनी परमात्मा शिव के प्रवेश के पश्चात् ब्रह्मा बाबा ने की। **-वी.ईश्वरैय्या, पूर्व एक्टिंग चीफ जस्टिस,** आंध्र प्रदेश उच्च न्यायालय

परमात्मा शिव बना रहे मनुष्य को देवता

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय, और विद्यालयों व संस्थाओं से अलग इसलिए है क्योंकि इसकी स्थापना स्वयं परमात्मा शिव ने की है। इस विश्व विद्यालय का उद्देश्य है मनुष्य को देवता बनाना। परमात्मा से मिलने के बाद हमारा जीवन दिव्यता से भर जाता है, हमारे जीवन में आध्यात्मिक उन्नति आने लगती है और वो दिव्य शक्तियां प्राप्त होती हैं जिनका हम हर परिस्थितियों में उपयोग कर सफलता को प्राप्त कर सकते हैं। **-धरमेश,** सिटिंग जज, राजकोट।